(18-2-67 (कृप्या इसको पढ़ने से पहले 17-2-67 का रात्री क्लास पढ़ना जी) ओम शान्ती प्रातः क्लास

मीठे-2 बच्चों को सारी सृष्टी का सारा ड्रामा अच्छी रीत बुधी में है। कन्ट्रास्ट भी बुधी में है। यह सारा बुधी में पक्का रहना चाहिये कि सतयुग में सभी श्रेष्टाचारी निरविकारी पावन, साल्वन्ट थे। अभी तो दुनियां भ्रष्टाचारी विकारी पतित इनसाल्वेन्ट है। अब तुम बच्चे संगम युग पर हो। तुम उस पार जा रहे हो जैसे नदी और सागर का जहां मेला होता है उनको संगम कहते है। एक तरफ मीठा पानी। एक तरफ खारा पानी होता है। अब यह भी है संगम। तुम जानते हो बरोबर सतयुग में ल0 ना0 का राज्य था। फिर ऐसे चक्र फिरा। अभी है संगम। कलियुग के अन्त में सब दुखी है। इनको जंगल कहा जाता है। सतयुग को बगीचा कहा जाता है। अभी तुम कांटे से फूल बन रहे हो। यह स्मृती तुम बच्चों को होनी चाहिये। हम बेहद के बाप से वर्सा ले रहे है। यह बुधी में याद रखना है। 84 जन्मों की कहानी तो बिलकुल कामन है। समझते हो अब 84 जन्म पूरे हुये है। तुम्हारी बुधी में तरावट है कि अभी हम सतयुगी बगीचे में जाते है। अभी हमारा जन्म इस मृत्यु लोक में नही होगा। हमारा जन्म होगा अमर लोक में। शिव बाबा को अमरनाथ भी कहते है। वो हमको अमर कहानी सुना रहे है। वहां हम शरीर होते हुये भी अमर रहेंगे। अपनी खुशी से समय पर शरीर छोड़ेंगे। इनको मृत्युलोक नही कहा जाता। तुम किसीको भी समझावेंगे तो समझेंगे इनमें तो पूरा ज्ञान है। सृष्टी की आद और अन्त तो है नां। छोटा बच्चा भी युवा फिर वृध होता है। तो अन्त आ जाती है। फिर बच्चा बनते है। सृष्टी भी नई बन फिर क्वाटर पुरानी, आधा पुरानी, पुनी पुरानी, फिर सारी पुरानी हो जाती है। फिर नई होगी। यह सब बातें और कोई एक दो को सुना नही सकते। ऐसी चर्चा कोई कर नही सक्ते है सिवाय तुम ब्राहम्णों के। सिवाय ब्राहम्णों के और कोई को रूहानी नालेज मिल नही सक्ती है। ब्राहम्ण वंश में आवें तब सुने। सिर्फ ब्राहम्ण ही जानते, ब्राहम्णों में भी नम्बरवार है। कोई यथार्थ रीती सुनाये सक्ते है कोई नही सुना सक्ते है। तो उनको कुछ मिलता नही है। जवाहरियों में भी देखेंगे कोई पास तो करोड़ों का माल रहता है कोई के पास तो दस हजार का भी माल नही होता। तुम्हारे में भी ऐसे है। जैसे देखो यह जनक है। यह अच्छा जवाहरी है। इनके पास वैल्युबुल जवाहर है। किसीको भी शाहुकार बना सक्ती है। कोई छोटे जवाहरी है जास्ती दे नही सक्ते। तो उनका पद भी कम हो जाता है। तुम सभी जवाहरी हो। यह अविनाशी ज्ञान रत्नों के जवाहर है। जिनके पास अच्छे रत्न होंगे वो शाहुकार बनेंगे। औरों को भी बनावेंगे। ऐसे तो नही सभी अच्छे जवाहरी होंगे। अच्छे-2 जवाहरी बड़े-2 सेन्टर्स पर भेजे देते है। गरीबों को हल्कु दिये जाते है। बड़े-2 दुकानों पर ऐक्सपर्ट रहते है। बाबा को भी कहा जाता है सौदागर रत्नागर। रत्नों का सौदा करते है। फिर जादुगर भी है। उनके पास दिव्य दृष्टी की चाबी है। कोई नौधा भक्ति करते है तो उनको सा0 हो जाता है। यहां वो बात नही है। यहां तो अनायास बैठे भी बहुतों को सा0 होता रहता है। दिन प्रती दिन सहज होता जावेगा। कईयों को ब्रहमा का और श्रीकृष्ण का भी सा0 होता है। उनको कहते है ब्रहमा के पास जाओ। जाकर उनके पास प्रिन्स बनने की पढ़ाई पढ़ो। यह पवित्र प्रिन्स प्रिन्सेज चलते आते है नां। प्रिन्स को भी पवित्र कह सक्ते है। पवित्रता से जन्म होता है नां। अभी तो छोटे बच्चों को भी भ्रष्टाचारी कहेंगे। क्यों कि भ्रष्टाचार से पैदा होती है। यह भी तुम जानते हो जन्म ही भ्रष्टाचार से होता है। इसलिये सारी दुनियां को ही भ्रष्टाचारी कहा गया है। सन्यासियों को भी भ्रष्टाचार से जन्म मिलता है। सतयुग में मूत पलीती कपड़ होते नही। वहां पवित्र होते है। भल यहां बच्चों की महिमा गाई जाती है परन्तु है तो भ्रष्टाचारी नां। पतित को ही भ्रष्टाचारी कहेंगे। पतित से पावन भ्रष्टाचारी से श्रेष्टाचारी बनना है। यह बुधी में रहना चाहिये जो किसी को समझा भी सके। मनुष्य समझते हैः- यह तो सैन्सीबुल है। बोलो हमारे पास कोई शास्त्रों की नालेज नही है। यह है रूहानी नालेज जो रूहानी बाप समझाते है। बोलो यह है त्रिमूर्ती ब्रहमा विष्णु शंकर। यह भी रचना है। रचता एक बाप है। वो होते है हद के क्रियेटर। यह है बेहद का बाप। बेहद का क्रियेटर। बाप बैठ कर पढ़ाते है।

मेहनत करनी होती है। गुलगुल बनाते है। कहीं कुल का नाम बदनाम नही हो। तुम हो ईश्वरीय कुल के। तुमको बाप पवित्र बनाते है। फिर अगर अपवित्र बनते है तो कुल कलंकित करते है। बाप तो जानते है नां फिर धर्मराज दवारा कड़ी सजायें दिलावेंगें। बाप के साथ धर्मराज भी है। धर्मराज की ड्यूटी भी अभी पूरी होती है। सतयुग में तो होगा ही नही। फिर शुरू होता है दवापुर से। बाप बैठ कर्म अकर्म विकर्म की गती समझाते है। कहते है नां इसनें आगें जन्म में ऐसा कर्म किया है जिसकी यह भोगना है। सतयुग में ऐसे नही कहेंगें। कु कर्मों का वहां नाम नही होता। यहां तो कु अच्छे दोनों है। सुख दुःख दोनों है। परन्तु सुख बहुत थोड़ा है। वहां फिर दुःख का नाम नही। सतयुगमें दुःख कहां से आया। तुम नई दुनियां का बाप से वर्सा लेते हो। बाप है ही दुःख हर्ता सुख कर्ता।। दुःख कब से शुरू होता है? यह भी तुम जानते हो। शास्त्रों में तो कल्प की आयु ही लम्बी चौड़ी लगा दी है। अभी तुम जानते हो हमारे आधा कल्प के लिये दुःख हट जावेंगें और हम सुख पावेंगें। यह सृष्टी का चक्र कैसे फिरता है यह समझाना बहुत सहज है। यह सब बातें तुम्हारें सिवाय और कोई की बुधी में हो नही सकती। लाखों वर्ष कह देनें से सब बातें बुधी से निकल जाती है। अभी तुम समझते हो यह चक्र 5000वर्ष का है। कल की बात है जब कि इन सूर्यवंशी चन्द्रवंशियों का राज्य था। कहते भी है ब्राह्मणों का दिन। ऐसे नही कि शिव बाबा का दिन कहेंगें। ब्राह्मणों का दिन फिर ब्राह्मणों की रात। ब्राह्मण सो ही फिर भक्ति मार्ग में चले जाते है। अब है संगम। नां दिन है नां रात है। तुमजानते हो हम ब्राह्मण फिर देवता बनेंगें सतयुग में। फिर त्रेता में क्षत्री बनेंगें। यह तो बुधी में पक्का याद कर लो। इन बातों को और कोई नही जानते। वो तो कहेंगें शास्त्रों में इतनी बड़ी आयु लगी हुई है। तुमनें फिर यह हिसाब कहां से लाया है। यह अनादी ड्रामा बना बनाया है। यह कोई नही जानते। तुम बच्चों की बुधी में है आधा कल्प है सतयुग त्रेता फिर आधा से भक्ति मार्ग शुरू होता है। वो हो जाता है त्रेता और दवापुर का संगम। दवापुर से ही यह शास्त्र आद देरी से बनते है। 2 सभी चीजें बनती है। भक्ति मार्ग की सामग्री बड़ी लम्बी चौड़ी है। जैसे झाड़ कितना लम्बा चौड़ा होता है। तुम्हारी बुधी में सारे झाड़ का ज्ञान है। इनका बीज है बाबा। यह उल्टा झाड़ है। पहले-2 है आदी सनातन देवी देवता धर्म। यह बातें बाप सुनाते है को बिलकुल है नई। इस देवी देवता धर्म के स्थापक को कोई नही जानते। कृष्ण तो बच्चा है। ज्ञान सुनाने वाला है बाप। तो बाप को उड़ा कर बच्चे का नाम डाल दिया है। कृष्ण के ही चरित्र आद बैठ बनाये है। बाप कहते है लीला कोई कृष्ण की नही है। गाते भी है हे प्रभु तेरी लीला अपरमअपार है। लीला एक की होती है। शिव बाबा की महिमा बड़ी-2 न्यारी है। वो तो है सदैव पावन रहने वाला। परन्तु वो पावन शरीर में तो आ नही सकते। उनको बुलाते है कि पतित दुनियां को आकर पावन बनाओ। तो बाप कहते है मुझे भी पतित दुनियां में आना पड़ता है। इनके बहुत जन्मों के अन्त में आकर प्रवेश करता हूं। तो बाप कहते है मुख्य बात अल्फ को याद करो। बाकी यह सारी है रेजगारी वो सभी तो धारन कर नां सकें जो धारन कर सकते है उनको समझाता हूं। बाकी तो कह देता हूं मनमनाभव। नम्बरवार बुधी तो होती है नां। बादल कोई तो खूब बरसते है। कोई थोड़ा बरस कर चले जाते है। तुम भी बादल हो नां। कोई तो बिलकुल बरसते ही नही है। ज्ञान को खेंचनें की ताकत नही है। मम्मा बाबा अच्छे बादल है नां। बच्चों को संग उनका करना चाहिये जो अच्छा बरसते है। जो बरसता ही नही उनसे संग रखने से क्या होगा? संग का दोष भी बहुत लगता है। कोई तो किसीके संग से हीरे जैसा बन जाते है। कोई फिर किसीके संग से ठिक्कर बन जाते है। पीठ पकड़नी चाहियेअच्छे की। परन्तु चं या रवैया है तो पीठ भी चूँ रवैं की ही पकड़ेंगी। ज्ञानवान जो होगा वो आप समान भी बनावेंगें। सत बाप से जो ज्ञान वान जो योगी बने है उनका संग करना चाहिये। ऐसे नही समझना है हम फलाने का पूंछ पकड़ कर पार चले ज

जावेंगे। ऐसे बहुत कहते है हम तुम्हारा पूंछ पकड़लेंगे ,परन्तु यहां तो वो बात नही है। स्टूडेन्ट किसी का पूंछ पकड़ने से पास होवेंगे क्या? पढ़ना पढ़े नां। बाप भी आकर नालेज देते है। इस समय वो जानते है हमको ज्ञान देना है। भक्ति मार्ग मे उनकी बुधी मे यह बाते नही रहती कि हमको जाकर ज्ञान देना है। यह सब ड्रामा मे नूंध है। बाबा कुछ करते नही है। ड्रामा मे दिव्य दृष्टी मिलने का पार्ट है तो सा० हो जाता है। बाबा कहते है ऐसे नही कि मै बैठ सा० कराता हूं। यह ड्रामा मे नूंध है। अगर कोई देवीका सा० करना चाहते है तो देवी तो नही करावेगी नां। कहते भी है हे भगवान हमको सा० कराओ। बाप कहते है ड्रामा मे नूंध होगी तो हो जावेगा। मै भी ड्रामा मे नूंधा हुआ हूं। बाबा ने कल रात्री क्लास मे प्रश्न दिया था नां। बाबा कहते है मै इस शरीर मे आया हुआ हूं। इनके मुख से मै बोल रहा हूं इनकी आखों से तुमको देख रहा हूं। अगर यह शरीर नां होता तो देख कैसे सकूं? मै सिर्फ इस समय ही शरीर मे आकर देखता हूं। पतित दुनियां मे ही मुझे आना है। स्वर्ग मे तो मुझे बुलाते ही नही। मुझे बुलाते ही संगम पर है। संगम पर आकर शरीर लेता हूं। तब ही देखता हूं।निराकारी रूप तो कुछ देख नही सकता हूं।आर्गन्स बिनप आत्मा कुछ भी कर नही सकती है। बाबा कहते है मै देख कैसे सकता। चुरपुर कैसेकर सकता बिगर शरीर के। यह तो अन्धश्रधा है क जो कहते है ईश्वर सब कुछ देख सकते है। सब कुछ वो करते है। देखेंगे फिरकैसे। जब आर्गन्स मिले तब तो देखे। बाप कहते है अच्छा वा बुरा काम ड्रामा अनुसार हर एक करते है। मै थोड़ेही इतना इतने 500 करोड़ मनुष्यों का बैठ कर हिसाब करूंगां। मै मुझे शरीर है तब सब कुछ करता हूं।मुझे करनकरावनहार भी तभी कहते है। नही तो कह नही सकते। मै जब इसमे आऊ तब आकर पावन बनाऊं नां। ऊपर मे आत्मा क्या करेगी। शरीर से ही तो पार्ट बजावेंगे नां। मै भी यहां आकर पार्ट बजाता हूं। सतयुग मे मेरा पार्ट है नही। पार्ट बिना कोई कुछ कर नही सकते। शरीर बिना आत्मा कुछ कर ना सके। आत्मा को बुलाया जाता है। आर्गन्स बिना कुछ भी कर नही सकते। यह है डिटेल की बाते। मुख्य बात तो कही जाती है बाप और वर्से को याद करो। बेहद का बाप इतना बड़ा है उनसे वर्सा कब मिलता होगा? यह कोई जानते नही। कहते है व आकर दुख हरो सुख दो। परन्तु कब? यह किसीको पता नही है। शास्त्रों मे तो कितना उल्टा लिख दिया है। कहां 84जन्म कहां तो फिर 84लाख जन्म। कितना फर्क हो गया। बाप कहते है कल्प की आयु 5000वर्ष।वो फिर कह देते लाखों वर्ष। मनुष्य फर्कशान बहुत हो गया है। यह बाते कोई की बुधी मे नही है। जो तुम सुनते हो। यह है नई बातें। अब तुम जानते हो हम अमर बन रहे है। अमरलोक मे जो रहे है। तो अमर लोक मे कितना बार गये है?अनेक बार। उनकी कब ऐंड होती नही। बहुत कहते है क्या मोक्ष नही मिल सकता। बोलो नही। यह अनादी अविनाशी ड्रामा है।यह कब विनाश हो नही सकते। यह तो अनादी चक्र फिरता ही रहता है। तुम हो सच्चे-2 फकीर। तुम ही हिसाब को जानते

****

हो। तुम सन्यासी हो नां। वो फकीर नही।सन्यासियों को भी फकीर कहा जाता है। राजऋषी। ऋषी को सन्यासी कहा जाता है। अब फिर तुम अमर बनते हो। भारत कितना अमर था। अभी कैसे फकीर बन गया है। भीख मांगते रहते है। सीढ़ी मे दिखाया है कैसे भारत सारा इनसाल्वन्ट है। फिर अमर बनेंगे। बेहद का बाप आकर बेहद का वर्सा देते है। गीतमे भी है बाबा आप जो देते हो सो कोई दे नही सकते। आप हमको विश्व का मालिक बनाते हो। जिसको कोई लूट नही सकते। ऐसे-2 गीत बनाने वाले भी अर्थ नही समझते। तुम जानते हो वहां पार्टीशन आद कुछ नही होगा। यहा तो कितना पार्टीशन है। वहां सारा आकाश धरती तुम्हारी रहती है। तो इतनी खुशी बच्चों को होनी चाहिये नां। हमेशा समझो शिव बाबा पढ़ाते है। क्यों कि वो तो कब हालीडे लेते नही। कब बिमार होते नही। याद शिव बाबा की ही रहनी चाहिये। इनको कहा जाता है निरअहंकारी। मै यह करता हूं, यह अहंकार नही आना चाहिये सर्विस करनी तो फर्ज है। इसमे अहंकार नही आना चाहिये। अहंकार आया और यह गिरा। यह है रूहानी सेवा बकी सब है जिस्मानी सेवा। अच्छा बच्चों को बेहदके मात-पिता बाप का दादा का याद प्यार और